Asian Culture
B.A. Semester II
Paper I : South Asia (1870-1919)

Department of Western History
University of Lucknow

*(Course Instructor: **Prof. Abha Trivedi**)*

The Partition of Bengal:

The Bengal Presidency consisted of Bengal, Bihar and Orissa along with some parts of Chhattisgarh and Assam. Having a population of nearly 80 million it was the largest Province of British India. It covered over 180,000 square miles of land territory. Surely, being the most populated Province it was not easy to administer this territory. During the decade of the 1900s, the population of Bihar and Orissa was over 21 million. Curzon wanted to divide the presidency of Bengal on the basis of Administrative boundaries. Apart from that, he was quite disturbed by the spirit of Nationalism among Indians. The divisions of Maymansingh and Bakarganj were a pain for him. So, the Viceroy decided to divide the Province into two parts. Hence, He planned to split Orissa and Bihar and join 15 eastern districts of Bengal with Assam. The Eastern province held a population of 31 million, most of which was Muslim, with its centre at Dhaka.

It was not the first time that these sort of divisions happened. In 1865, present-day Uttar Pradesh was joined into North-Western Province and Assam was separated from it. In 1904, Curzon paid a visit to Eastern Bengali territories and in October 1905, he decided to implement this Partition. Eastern Bengal and Assam were made into a brand new Province which included Rajshahi, Chitgaon and Dhaka divisions, with Dhaka as its center. It consisted of a land area of 106,540 square miles and a population of 31 million, of which, 18 million of Muslims and 12 million Hindus and 1 million others. Dhaka was its Head-quarter. A lieutenant-governor was to rule this new province. The other province was made of Bihar, Western Bengal and Orissa, consisting 141,580 square miles of land and the population of 54 million, of which 42 million Hindus and 9 million Muslims. This Partition was carried out on 16 October 1905.

The Swadeshi Movement:

The Swadeshi literally means “Of one’s own country”. The Swadeshi movement had its roots in the decade of 1870s , when Bhola Chandra suggested to hone boycott and Swadeshi as their tool against the British, to discourage them and put economic pressure on the British. “Annual Hindu Fair” was another step towards this policy, organized by Nav Gopal Mitra and Raj Narayan Bose.

The strategy behind the Swadeshi, and its complementary, the Boycott, is to starve the British out. For if the natives refused to use British articles, and use Native and Homemade articles instead, it would encourage Indian tradesmen and economy as well.

The Swadeshi and Boycott movement reached its peak with the Anti-Partition movement. Surely, the partition was based on *Communal Bases.* It began on 7 August 1905. People of Calcutta showed their discontent by protesting in front of Town Hall. They rallied in a cry and recited “Bande Mataram”, “Bengal is United” consistently. Students, Scholars, Middle class, Teachers all contributed to this movement. People wore Sacred Threads around their wrists as a signature of Unity. They did not lit a single furnace and did not eat food. They condemned the day 16 October as “The Black Day” or “The Day of mourning”. Rabindra Nath Tagore wrote the National Anthem.

Lawyers, Teachers resigned from their jobs to join the Anti-Partition movement. Even Priests refused to take any British-made article as tribute or offerings during Ceremonies.

Surendar Nath Bonnerjee was people’s face in this movement. He encouraged the boycott movement by calling upon students to leave the government institutions. The traders, merchants and Industrialists also contributed to the movement. J.N Tata established *Tata Iron and Steel Plant* in Jamshedpur.

Tilak and other congress leaders led the people into this movement with full enthusiasm. They celebrated Native festivals, wore Native clothes, ate and drank native food and beverages.

Native newspapers, pamphlets and magazines provided their full support to this movement. They encouraged the spirit of Nationalism with their publications. Surendar Nath Bonnerjee, Ashwini Kumar Dutta, Bipin Chander Pal and Arubindo Ghosh organized many organizations and Samitis.

Native small industries were encouraged, handicraft, matchboxes, Soap and other daily commodities were based on the spirit of Swadeshi. Acharya P.C. Ray introduced *Bengal Chemical Swadeshi Stores and Tagore Swadeshi Stores.* Chidambaram Pillai established the Swadeshi Shipping company in Tuticorin, Tamil Nadu.

National Education was one of the tools for encouragement of Swadeshi. In this run, Bhagwat Chatushpathi, a weekly magazine by Satish Chandra Mukherjee. Saraswat Aaytan by Brahmo Bandhava Upadhyaya (1902) were some leading efforts. Tagore nath Tagore established “***Brahmacharya Ashram”,*** Lokmanya Tilak established Deccan Education Society.

1. Arubindo Ghosh- Bande Mataram

2. Jugantar Patrika- Bhupendra Nath Dutta and W.K. Ghosh (1906)

3. Sandhya- Brahmo Bandhav Upadhyaya

4. Amrit Bazar Patrika- Shishir Kumar Ghosh and Motilal Ghosh (1868)

Picketings was another tool for the people. There were many Strikes at factories and Mills. For example, the workers at Bharat Sarkar Press, Bengal Sarkar Press, East Indian Railway, Calcutta telegraph conducted strikes.

After all these efforts, Partition of Bengal got cancelled in 1911. But this is remarkable that it somehow made an impact on some communal minds that led to Communal disputes in upcoming time.

बंगाल का विभाजन:

बंगाल प्रेसीडेंसी में छत्तीसगढ़ और असम के कुछ हिस्सों के साथ बंगाल, बिहार और उड़ीसा शामिल थे। लगभग 80 मिलियन की आबादी वाले यह ब्रिटिश भारत का सबसे बड़ा प्रांत था। इसने 180,000 वर्ग मील भूमि क्षेत्र को कवर किया। निश्चित रूप से, सबसे अधिक आबादी वाला प्रांत होने के नाते इस क्षेत्र का प्रशासन करना आसान नहीं था। 1900 के दशक के दौरान, बिहार और उड़ीसा की आबादी 21 मिलियन से अधिक थी। कर्जन प्रशासनिक सीमाओं के आधार पर बंगाल प्रेसिडेंसी को विभाजित करना चाहते थे। इसके अलावा, वह भारतीयों में राष्ट्रवाद की भावना से काफी परेशान थे। मेमनसिंह और बाकरगंज के क्षेत्र उसके लिए एक पीड़ा थे। इसलिए, वायसराय ने प्रांत को दो भागों में विभाजित करने का निर्णय लिया। इसलिए, उन्होंने उड़ीसा और बिहार को विभाजित करने और असम के साथ बंगाल के 15 पूर्वी जिलों को जोड़ने की योजना बनाई। पूर्वी प्रांत में 31 मिलियन की आबादी थी, जिसमें से अधिकांश मुस्लिम थे, इसका केंद्र ढाका में था।

यह पहली बार नहीं था कि इस तरह के विभाजन हुए। 1865 में, वर्तमान उत्तर प्रदेश को उत्तर-पश्चिमी प्रांत में शामिल किया गया और असम को इससे अलग कर दिया गया। 1904 में, कर्जन ने पूर्वी बंगाली प्रदेशों का दौरा किया और अक्टूबर 1905 में उन्होंने इस विभाजन को लागू करने का निर्णय लिया। पूर्वी बंगाल और असम को एक नए प्रांत में बनाया गया, जिसमें राजशाही, चिटगाँव और ढाका विभाग शामिल थे एवं ढाका केंद्र के रूप में था,। इसमें 106,540 वर्ग मील के भू-भाग और 31 मिलियन की आबादी थी, जिसमें 18 मिलियन मुस्लिम और 12 मिलियन हिंदू और 1 मिलियन अन्य थे। ढाका इसका हेड-क्वार्टर था। एक लेफ्टिनेंट-गवर्नर को इस नए प्रांत पर शासन करना था। अन्य प्रांत बिहार, पश्चिमी बंगाल और उड़ीसा से बना था, जिसमें 141,580 वर्ग मील भूमि और 54

मिलियन की आबादी थी, जिसमें 42 मिलियन हिंदू और 9 मिलियन मुस्लिम थे। यह विभाजन 16 अक्टूबर 1905 को किया गया था।

स्वदेशी आंदोलन:

स्वदेशी का शाब्दिक अर्थ है "देश का अपना"। 1870 के दशक में स्वदेशी आंदोलन की जड़ें थीं, जब भोला चंद्रा ने अंग्रेजों के खिलाफ उनके औजार के रूप में बहिष्कार और स्वदेशी को बढ़ावा देने, उन्हें हतोत्साहित करने और अंग्रेजों पर आर्थिक दबाव डालने का सुझाव दिया। नव गोपाल मित्र और राज नारायण बोस द्वारा आयोजित इस नीति की दिशा में "वार्षिक हिंदू मेला" एक और कदम था।
स्वदेशी, और इसके पूरक, बहिष्कार के पीछे की रणनीति, विदेशी वस्तुओं का इस्तेमाल ना करना है। यदि मूल निवासी ब्रिटिश वस्तुओं का उपयोग करने से इनकार करते हैं, और इसके बजाय मूल और घर के बने वस्तुओं का उपयोग करते हैं, तो यह भारतीय व्यापारियों और अर्थव्यवस्था को भी प्रोत्साहित करेगा।
स्वदेशी और बहिष्कार आंदोलन विभाजन विरोधी आंदोलन के साथ अपने चरम पर पहुंच गया। निश्चित रूप से, विभाजन सांप्रदायिक मामलों पर आधारित था। इसकी शुरुआत 7 अगस्त 1905 को हुई थी। कलकत्ता के लोगों ने टाउन हॉल के सामने विरोध प्रदर्शन कर अपना असंतोष दिखाया। उन्होंने "बन्दे मातरम्", "बंगाल एक है" के नारे लगातार लगाते रहे। छात्रों, विद्वानों, मध्य-वर्ग, शिक्षकों सभी ने इस आंदोलन में योगदान दिया। लोगों ने एकता के रूप में अपनी कलाई पर पवित्र धागे पहने। उन्होंने एक भी चूल्हा नहीं जलाया और खाना नहीं खाया। उन्होंने 16 अक्टूबर के दिन को "काला दिवस" या "शोक का दिन" कहा। रवीन्द्र नाथ टैगोर ने राष्ट्रगान लिखा था।
विभाजन-विरोधी आंदोलन में शामिल होने के लिए वकीलों, शिक्षकों ने अपनी नौकरी से इस्तीफा दे दिया। यहां तक कि पुरोहितों ने समारोह के दौरान किसी भी ब्रिटिश-निर्मित वस्तुओं को श्रद्धांजलि या दक्षिणा के रूप में लेने से इनकार कर दिया।
इस आंदोलन में सुरेंद्र नाथ बैनर्जी लोगों का चेहरा थे। उन्होंने छात्रों को सरकारी संस्थानों को छोड़ने का आह्वान करके बहिष्कार आंदोलन को प्रोत्साहित किया। व्यापारियों, व्यापारियों और उद्योगपतियों ने भी आंदोलन में योगदान दिया। जे.एन. टाटा ने जमशेदपुर में *टाटा आयरन एंड स्टील प्लांट* की स्थापना की।
तिलक और कांग्रेस के अन्य नेताओं ने पूरे उत्साह के साथ लोगों को इस आंदोलन में शामिल किया। उन्होंने मूल त्योहार मनाया, मूल कपड़े पहने, खाया और देशी भोजन और पेय पदार्थ पीए।
मूल समाचार पत्रों, पुस्तिकाओं और पत्रिकाओं ने इस आंदोलन को अपना पूर्ण समर्थन प्रदान किया। उन्होंने अपने प्रकाशनों के साथ राष्ट्रवाद की भावना को प्रोत्साहित किया। सुरेंद्र नाथ बोनेर्जी, अश्विनी कुमार दत्ता, बिपिन चंदर पाल और अरुबिंदो घोष ने कई संगठनों और समितियों का आयोजन किया।
देशी छोटे उद्योगों को प्रोत्साहित किया गया, हस्तकला, माचिस, साबुन और अन्य दैनिक वस्तुओं स्वदेशी की भावना पर आधारित थे। आचार्य पी.सी. रे ने बंगाल केमिकल स्वदेशी स्टोर्स और टैगोर स्वदेशी स्टोर्स की शुरुआत की। चिदंबरम पिल्लई ने तमिलनाडु के तूतीकोरिन में स्वदेशी शिपिंग कंपनी की स्थापना की।

स्वदेशी को प्रोत्साहित करने के लिए **राष्ट्रीय शिक्षा** एक साधन था। इस भाग में, सतीश चंद्र मुखर्जी की साप्ताहिक पत्रिका *भागवत चतुष्पति,* ब्रह्मा बंधु उपाध्याय (1902) के *सारस्वत आयतन* कुछ प्रमुख प्रयास थे। टैगोर नाथ टैगोर ने "ब्रह्मचर्य आश्रम" की स्थापना की, लोकमान्य तिलक ने “दक्कन शिक्षा समाज” की स्थापना की।

1. अरुबिंदो घोष- बंदे मातरम
2. जुगन्तर पत्रिका- भूपेंद्र नाथ दत्ता और डब्ल्यू.के. घोष (1906)
3. संध्या- ब्रह्मो बंधव उपाध्याय
4. अमृत बाजार पत्रिका- शिशिर कुमार घोष और मोतीलाल घोष (1868)

पिकेटिंग अर्थात धरने लोगों के लिए एक और उपकरण था। कारखानों और मिलों में कई हड़ताल हुई। उदाहरण के लिए, भारत सरकार प्रेस, बंगाल सरकार प्रेस, ईस्ट इंडियन रेलवे, कलकत्ता टेलीग्राफ के कर्मचारियों ने हड़तालें कीं।

इन सभी प्रयासों के बाद, 1911 में बंगाल का विभाजन रद्द हो गया। लेकिन यह उल्लेखनीय है कि इसने कुछ सांप्रदायिक दिमागों पर प्रभाव डाला, जिससे आगामी समय में सांप्रदायिक विवाद पैदा हो गए।